न्यायालय प्राथमिक शिक्षक चयन परीक्षा 2025 का मामला, 13089 प्राथमिक शिक्षक के पदों पर हुई है भर्ती परीक्षा

अपात्रों को बोनस अंक मामले में हाईकोर्ट का फैसला सुरक्षित

जबलपुर। मप्र हाईकोर्ट ने प्राथमिक शिक्षक चयन परीक्षा-2025 के परीक्षा परिणामों में गड़बड़ी और अपात्र उम्मीदवारों को गलत तरीके से बोनस अंक दिए जाने के आरोप के मामले को सख्ती से लिया। जस्टिस विशाल धगट की एकलपीठ ने बुधवार को सभी पक्षों को सुनने के बाद मामले में अपना फैसला सुरक्षित रख लिया है।

दरअसल यह मामले नरसिंहपुर निवासी सोनम अगरैया एवं अन्य दो उम्मीदवारों की ओर से दायर किये गये थे। जिसमें कहा गया कि प्राथमिक शिक्षक चयन परीक्षा-2025 भर्ती विज्ञापन की कंडिका 7.7 के तहत केवल उन उम्मीदवारों को 5 फीसदी बोनस अंक मिलने थे, जिनके पास भारतीय पुनर्वास परिषद से मान्यता प्राप्त विशेष शिक्षा में डिप्लोमा है । चयन सूची में लगभग 14,964 उम्मीदवारों ने खुद को इस श्रेणी में दिखाकर बोनस अंक प्राप्त कर लिए हैं । भारतीय पुनर्वास परिषद (आरसीआई) के आंकड़ों का हवाला देते हुए न्यायालय को बताया गया कि पूरे प्रदेश में आरसीआई के

पोर्टल पर केवल 2,194 कार्मिक और 3,077 पेशेवर ही पंजीकृत हैं । ऐसे में लगभग 15,000 उम्मीदवारों का विशेष शिक्षा प्रमाणपत्र धारक होना प्रथम दृष्टया फर्जी प्रतीत होता है । तर्क दिया गया कि लोक शिक्षण संचालनालय ने भी जनवरी 2026 में विभाग को आगाह किया था कि लगभग 18,000 उम्मीदवारों ने हां का विकल्प चुना है, जो अत्यधिक प्रतीत होता है । इसके बावजूद, सुधार के लिए पोर्टल खोलने के बाद भी मंडल के द्वारा उम्मीदवारों से आरसीआई की पंजीकरण संख्या या प्रमाणपत्र नहीं मांगा गया । इसके चलते बड़ी संख्या में फर्जी बोनस वाले अभ्यर्थी मेरिट लिस्ट में आ गए। याचिका में 27 फरवरी 2026 को जारी दोषपूर्ण मेरिट लिस्ट को रद्द करने की मांग की गई । केवल वैध आरसीआई प्रमाणपत्र धारकों को ही बोनस अंक देकर नई मेरिट सूची जारी करने के निर्देश देने का आग्रह किया गया।

पिता अपनी पुत्री को तीन हजार मासिक भरण-पोषण राशि दें : कुटुम्ब न्यायालय

जबलपुर। कुटुम्ब न्यायालय की प्रधान न्यायाधीश दिव्यांग जोशी पांडे की अदालत ने पिता को आदेशित किया है कि वह अपनी पुत्री को तीन हजार रुपये मासिक अंतरिम भरण-पोषण राशि अदा करे। यह राशि पत्नी के बैंक खाते में आनलाइन ट्रांसफर की जाए। आवेदिका जबलपुर निवासी खुश्बू कुशवाहा की ओर से दलील दी गई कि संजय सरीन से 21 अप्रैल 2020 को हिंदू रीति-रिवाज से विवाह हुआ था। जिसके बाद पुत्री सिद्धी सरीन का जन्म हुआ। पति-पत्नी के बीच विवाद चल रहा है। इस वजह से दोनों साथ नहीं रहते। आवेदिका की मासिक आय आठ हजार रुपये मासिक है। यह भरण-पोषण के लिए अपर्याप्त है। इसीलिए पति से भरण-पोषण राशि दिलाने की मांग की गई है। अदालत ने मांग स्वीकार कर ली।

बताओ किस कानूनी प्रावधान के तहत सील की गई दुकान

जबलपुर। मप्र हाईकोर्ट ने कछपुरा ब्रिज के सामने स्नेह नगर में स्थित दुकान सील किये जाने के मामले में जवाब तलब किया है। जस्टिस दीपक खोत की एकलपीठ ने मामले में आबकारी सहायक आयुक्त संजीव कुमार दुबे एवं पुलिस अधीक्षक को हलफनामे पर जवाब पेश करने के निर्देश दिए। इसके साथ ही न्यायालय ने तत्काल दुकान खोलने के निर्देश देते्ए मामले की अगली सुनवाई 11 मई को निर्धारित की है। यह मामला जबलपुर निवासी विवेक त्रिपाठी की ओर से दायर किया गया है। जिनकी ओर से अधिवक्ता अंशुमान सिंह ने पक्ष रखा। जिन्होंने बताया कि एक शिकायत पर स्थानीय पुलिस की मदद से आबकारी अधिकारियों ने याचिकाकर्ता की दुकान सील कर दी। कार्रवाई के पहले नोटिस भी नहीं दिया गया। याचिकाकर्ता ने इस संबंध में सीसीटीवी फुटेज भी पेश किए। न्यायालय के निर्देश पर आबकारी उप निरीक्षक रवि शंकर मरावी ने उपस्थित होकर बताया कि सहायक आयुक्त आबकारी के मौखिक आदेश पर सीलिंग की कार्रवाई की गई। वहीं शासकीय अधिवक्ता ने बताया कि आबकारी अधिनियम या बीएनएसएस के अंतर्गत परिसर को सील करने का कोई प्रावधान नहीं है। बताया गया कि आबकारी अधिकारियों को सूचना मिली थी कि दुकान एक शराब लाइसेंसी को दी जा रही है, इसलिए कानून-व्यवस्था भंग होने की आशंका के कारण दुकान को सील कर दिया गया। कोर्ट ने नाराजगी उक्त अधिकारियों को शपथ पत्र पर जवाब पेश करने के निर्देश दिये है।

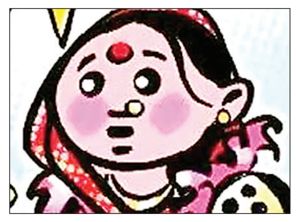

15 साल की बालिका बनी दुल्हन

जबलपुर। सिहोदा में 15 साल की बालिका को दुल्हन बना दिया। जैसे ही इसकी भनक प्रशासनिक अमले को लगी तो टीम ने पहुंचकर बाल विवाह को रूकवाया।

जानकारी के अनुसार शहपुरा विकासखण्ड की ग्राम पंचायत सिहोदा की पंद्रह वर्षीय बालिका का 13 मई को विवाद होने वाला था। बालिका का विवाह सहसन में होना तय हुआ था। नाबालिग के विवाह की सूचना मिलते ही प्रशासन की टीम ने मौके पर पहुंचकर बालिका के माता.पिता एवं संबंधित परिजनों को बाल विवाह प्रतिषेध अधिनियम 2006 के प्रावधानों की जानकारी दी तथा बालिका का विवाह 18 वर्ष की उम्र पूर्ण करने के बाद विवाह करने के लिए समझाइश दी। बालिका के परिवारजनों पर इस समझाइश का असर हुआ और उन्होंने बालिका का विवाह बालिग होने से पूर्व नहीं करने की सहमति दी।

संविदा सहायक अभियंता की सेवा समाप्त

लगभग 73 लाख रुपये की सामग्री का किया था आहरण

कृषक मित्र योजना में किया गबन

नवभारत, जबलपुर। मध्यप्रदेश पूर्व क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी लिमिटेड द्वारा 'मुख्यमंत्री कृषक मित्र योजना' के क्रियान्वयन में पाई गई वित्तीय अनियमितताओं के मामले में सख्त कार्रवाई करते हुए सागर स्थित उपसंभाग-सेकंड में पदस्थ संविदा सहायक अभियंता अवनीश जरोलिया की संविदा सेवा समाप्त कर दी गई है। जानकारी के अनुसार अवनीश जरोलिया को एस.टी.सी. उपसंभाग का अतिरिक्त प्रभार भी सौंपा गया था। योजना के अंतर्गत सामग्री आहरण एवं कार्यों के निष्पादन में अनियमितताओं की शिकायत प्राप्त होने पर मुख्यालय स्तर से तीन सदस्यीय जांच समिति गठित की गई थी। जांच समिति द्वारा प्रस्तुत प्रतिवेदन एवं उपलब्ध दस्तावेजों के परीक्षण में यह पाया गया कि कृषक मित्र योजना के तहत अनेक कार्यों के लिए बिना विधिवत कार्यादेश जारी हुए क्षेत्रीय भंडार, सागर से लगभग 73 लाख रुपये

मूल्य की सामग्री का आहरण किया गया।

पदनामों का उपयोग कर आहरित की सामग्री

जांच में यह भी सामने आया कि संबंधित अधिकारी द्वारा विभिन्न पदनामों का उपयोग करते हुए सामग्री आहरित की गई तथा कंपनी द्वारा जारी दिशा-निर्देशों एवं संविदा सेवा नियमों का पालन नहीं किया गया। कंपनी ने इसे गंभीर वित्तीय अनियमितता एवं प्रशासनिक लापरवाही माना और संविदा सेवा (अनुबंध एवं सेवा की शर्तें) संशोधित नियम-2023 के अंतर्गत कार्रवाई की। कंपनी प्रबंधन ने स्पष्ट किया है कि योजनाओं के क्रियान्वयन में पारदर्शिता एवं जवाबदेही सुनिश्चित करना सर्वोच्च प्राथमिकता है तथा किसी भी प्रकार की अनियमितता या शासकीय योजनाओं में लापरवाही को बर्दाश्त नहीं किया जाएगा।

रिंग रोड प्रोजेक्ट में काम कर रहे श्रमिक की संदिग्ध मौत

खाना खाते समय बिगड़ी थी तबीयत

जबलपुर। खमरिया थाना अंतर्गत रिंग रोड परियोजना में काम कर रहे एक 20 वर्षीय श्रमिक की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हो गई। घटना उस समय हुई जब युवक अपने कमरे में भोजन कर रहा था। पुलिस ने मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी है।

पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार रीवा जिले के ग्राम सथनी निवासी सूरज सिंह राजपूत (20) डुमना एयरपोर्ट कैंपस के पास स्थित अमझर कैंप में रहकर रिंग रोड निर्माण कार्य में मजदूरी करता था। उसके रूममेट विकास कुमार

गुर्जर ने पुलिस को बताया कि बीती रात करीब 8:30 बजे सूरज अपने कमरे में खाना खा रहा था। तभी कैंप के एक अन्य लड़के ने सूचना दी कि सूरज की तबीयत अचानक बिगड़ गई है और वह बिस्तर पर उल्टी कर रहा है। जब साथी कर्मचारी कमरे में पहुंचे तो सूरज बेसुध हालत में था और उसे सांस लेने में भारी कठिनाई हो रही थी। उसके पास ही खाने की थाली रखी हुई थी। सहकर्मियों ने आनन-फानन में सूरज को गाड़ी से पहले रांझी अस्पताल पहुंचाया, जहां से उसे गंभीर स्थिति में विक्टोरिया अस्पताल रेफर कर दिया गया। हालांकि, विक्टोरिया अस्पताल पहुंचने पर डॉक्टर ने परीक्षण के बाद उसे मृत घोषित कर दिया। पुलिस ने पंचनामा कार्यवाही की और शव को पोस्टमार्टम के लिए भिजवाया है। पुलिस इस बात की जांच कर रही है कि मौत की वजह फूड पॉइजनिंग, कार्डियक अरेस्ट या कोई अन्य कारण है। कैंप में साथ रहने वाले अन्य श्रमिकों से भी पूछताछ की जा रही है। पुलिस का कहना है कि पीएम रिपोर्ट आने के बाद मौत का कारण स्पष्ट हो जाएगा उसके बाद जो तथ्य सामने आएंगे उसके आधार पर आगे की कार्रवाई होगी।

हाशिए पर रखकर बिना स्वीकृति के कर दी नियुक्ति

- कांग्रेसी दीपक सिंह राजपूत ने नए पद को लेकर दिया इस्तीफा
- कांग्रेस में विरोध के स्वर तेज

नवभारत, जबलपुर। मध्य प्रदेश कांग्रेस कमेटी के समाज कल्याण प्रकोष्ठ के प्रदेश महासचिव दीपक सिंह राजपूत को जवाहरलाल नेहरू ब्लॉक कांग्रेस कमेटी का सोशल मीडिया प्रभारी बनाए जाने से समर्पित निष्ठावान कांग्रेस कार्यकर्ताओं में नाराजगी स्पष्ट रूप से नजर आने लगी है। संगठन में अंदरूनी तौर पर

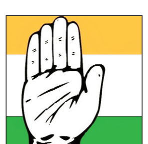

विरोध के स्वर तेज हो चुके हैं। बुधवार को मध्य प्रदेश कांग्रेस कमेटी के समाज कल्याण प्रकोष्ठ के प्रदेश महासचिव दीपक सिंह राजपूत ने आरोप लगाते हुए कहा कि कांग्रेस के शीर्ष नेतृत्व ने बिना उनकी स्वीकृति के गरीमा को ठेस पहुंचाते हुए जवाहरलाल नेहरू ब्लॉक का सोशल मीडिया प्रभारी नियुक्त किया है। इसलिए मैं उस पद से इस्तीफा दे रहा हूँ। दीपक ने इस्तीफा देते समय ये भी कहा कि यह पद मेरी योग्यता के अनुसार नहीं है, उनके अनुसार उन्हें हाशिए पर रखने की कोशिश की जा रही है। दीपक ने दो टूक कहा कि संगठन में पद वितरण में व्यक्ति की कार्य कुशलता को दरकिनार रखकर उन्हें मात्र उपयोग के लिए पार्टी में स्थान दिया गया है। जानकारी के अनुसार दीपक राजपूत ने बुधवार को मध्य प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष जीतू पटवारी एवं मध्य प्रदेश कांग्रेस के प्रभारी हरीश चौधरी को अपना इस्तीफा प्रेषित किया है। विदित हो कि दीपक कांग्रेस में पिछले 25 सालों से लगातार सेवाएं देते आ रहे हैं।

क्या हमेशा दूसरों जिलों के ही भरोसे रहेंगे हम?

क्रूज हादसे ने दी गवाही, कितने कमजोर हैं हम, जिंदा लाशें लहरों में तैरती रहीं, बाहर से बुलाते रहे मदद

चीखों की गूंज के बीच रेस्क्यू ऑपरेशन में लाचारी का प्रदर्शन

अजहर खान

जबलपुर। 30 अप्रैल की शाम को जब बरगी बांध की लहरों के बीच से जिंदगी की आखिरी पुकारें आ रहीं थीं, तब शहर का सिस्टम अपने पुराने रवायती अंदाज में कागजी घोड़े दौड़ाने में व्यस्त था। परिजन बदहवास होकर किनारों पर दौड़ते रहे, चीखते रहे, लेकिन उन्हें सांत्वना देने वाला भी कोई नहीं था। जिंदा लाशें लहरों में तैर रहीं थीं और मदद बाहर से बुलाई जा रही थी। बरगी बांध में क्रूज हादसे के बाद चार दिनों तक यहाँ जो मंजर दिखा, उसने न केवल सिस्टम के खोखलेपन को उजागर कर दिया, बल्कि गवाही दे डाली है कि आपदा के समय मौत से जिंदगी की जंग लड़ने में जबलपुर कितना कमजोर है। ये सच डराने वाला है। चार दिनों तक बरगी का पानी सिर्फ लाशें नहीं उगल रहा था, बल्कि सिस्टम की संवेदनहीनता और रेस्क्यू दल की कमजोरी की भी गवाही भी दे रहा था।

हादसे के तुरंत बाद इससे निपटने के लिए न तो पर्याप्त गोताखोर थे और न ही आधुनिक मशीनें थीं। बचाव दल इस बड़े हादसे के दौरान पूरी तरह बेबस नजर आया। स्थिति इतनी गंभीर हो गई कि जिला टीम के हाथ-पांव फूल गए थे और बचाव के लिए आनन-फानन में पड़ोसी पांच जिलों से रेस्क्यू टीमों को बुलाना पड़ा। जब मौत-जिंदगी के बीच रेस्क्यू टीमें बाहर से बुलाई जाती रहीं, तब घड़ी की सुइयां चलती रहीं, लेकिन बांध के किनारे खड़े परिजनों की सांसे ऊपर-नीचे होती रहीं। अंततः जब हालात काबू से बाहर हो गए, तब सेना को मोर्चा संभालना पड़ा था। यह क्रूज हादसा यह सवाल भी खड़ा कर गया है कि क्या हम हमेशा दूसरों जिलों के भरोसे ही रहेंगे? जिला आपदा प्रबंधन का अमला कब मजबूत होगा, कब हम इतने ताकतवर होंगे कि जिंदगी से मौत की जंग अपने दम पर जीत पाएं। यह हादसा सिर्फ एक प्राकृतिक आपदा नहीं, बल्कि एक प्रशासनिक विफलता भी है। अगर समय रहते पर्याप्त रेस्क्यू बल समय पर मिल जाता तो शायद कई जिंदगियां और बचाई जा सकती थीं। फिलहाल तूफान की लहरें शांत तो हो गई हैं, लेकिन अपने पीछे वह चीखें छोड़ गई हैं जो सालों तक शहर के सिस्टम को कचोटती रहेंगी।

एसडीआरएफ: सिर्फ 8 जवान, 4 जाने वाले और कागजों में 100 की स्वीकृति

नवभारत ने जब पड़ताल की तो चौंकाने वाला आंकड़ा सामने आया। एसडीआरएफ का प्रदेश में 2014 में गठन हुआ था लेकिन जब से रेस्क्यू दल का गठन हुआ तब से

जबलपुर एनडीआरएफ के पास जवानों की कमी बनी हुई हैं। जिले की करीब 25 लाख से अधिक की आबादी है और एसडीआरएफ जवानों की संख्या वर्तमान में 8 है, जबकि 100 की स्वीकृति है। एसडीआरएफ के पास कुल 18 बोट हैं। पहले ही बल की कमी से जूझ रही एनडीआरएफ के चार जवान भी इसी माह यहां से विदाई लेने वाले है। उनका चयन पुलिस विभाग में हो गया। इसके बाद सिर्फ चार ही जवान एसडीआरएफ के पास बचेंगे। भगवान न करें ऐसा हादसा फिर कभी हो लेकिन अगर क्रूज जैसा या इससे बड़ा हादसा हुआ तो स्थिति इससे भी खौफनाक हो सकती है।

होमगार्ड: 400 का बल, 265 रिक्त

होमगार्ड जबलपुर के पास 400 का बल है जिसमें से 265 रिक्त पड़े हैं। इसके अलावा 400 के बल में से 14 एसडीआरएफ के पास है जिसमें से 6 जवानों की तैनाती दूसरे जिलों में की गई हैं । जबकि 25 से अधिक बोट है। सूत्रों के मुताबिक होमगार्ड के पास आधुनिक बचाव उपकरण और प्रशिक्षण का अभाव है।

बस....जांच बैठाई मुआवजे का ऐलान

हर बार की तरह इस बार भी जांच बैठाई गई। मुआवजे का ऐलान हुआ लेकिन रेस्क्यू दल की ताकत बढ़ाने की कहीं कोई बात नहीं हुई। कुछ समय बाद सब कुछ भुला दिया जाएगा। लेकिन उन चीखों का क्या जो बरगी की हवाओं में घुल गई हैं? उन परिवारों का क्या जिनका सब कुछ इन लहरों ने छीन लिया? बल की कमी और संसाधनों के अभाव से कालकवलित होने वाले लोगों के लिये यह संपूर्ण सिस्टम गुनहगार ही रहेगा।

युवा, मजदूर न कूदते तो कई और जानें जातीं

चार दिनों तक चली चीख-पुकार, अपनों को खोने का दर्द और प्रशासनिक सुस्ती के बीच आखिरकार रेस्क्यू ऑपरेशन तो थम गया, लेकिन कई ऐसे सवाल छोड़ गया जिनका जवाब देने वाला कोई नहीं हैं। रेस्क्यू दल के साथ इस हादसे में कुछ युवा और मजदूरों ने भी अपनी जान की परवाह किए बिना कई जानें बचाई अगर ये युवा और श्रमिक न होते तो कई और जाने जाती और अगर दूसरे जिलों की टीमें समय पर नहीं पहुंचतीं, सेना मोर्चा न संभालती तो मौतों का आंकड़ा और भी भयावह हो सकता था।

फूली हुई लाशें बिना रेस्क्यू के भी मिल जातीं

हादसे के बाद चार दिनों तक रेस्क्यू का शोर गूंजता रहा। परिजन अपनों के मिलने की उम्मीद में टकटकी लगाएं पानी की ओर देख रहे थे, लेकिन उम्मीद की जगह वहां से सिर्फ बदबूदार, फूल चुके शव बाहर आ रहे थे। बल, संसाधनों के अभाव ने त्रासदी को इतना लंबा खींच दिया कि जो समय रहते बचाये जा सकते है, उन्हें भी खोना पड़ गया। जब कुछ शव पानी की सतह पर आए, तो उन्हें देखना मतलब रूह कंपा देने वाला था। पानी में चार दिन रहने के कारण शरीर इस कदर फूल चुके थे कि अपनों ने उन्हें सिर्फ कपड़ों या निशानों से पहचाना। उन परिजनों के मन में क्या बीत रही होगी, जो इस आस में बैठे थे कि शायद कोई चमत्कार हो जाएं, लेकिन अंत में उन्हें तो सिर्फ अपने प्रियजन का क्षत-विक्षत शरीर मिला।

कागजों पर मजबूत, विफलता चिंता का विषय

इस खौफनाक हादसे ने यह साफ कर दिया है कि जिला स्तर पर रेस्क्यू दल सिर्फ कागजों पर ही मजबूत है। करोड़ों के बजट और समय-समय पर होने वाली मॉक ड्रिल के बावजूद, असल संकट के समय टीम की विफलता चिंता का विषय है। हादसे ने न केवल सुरक्षा इंतजामों पर सवाल उठाए हैं, बल्कि जिले के रेस्क्यू दल की उस खोखली तैयारियों को भी बेनकाब कर दिया है, जिसके दम पर आपदा प्रबंधन का दावा करता था। जब क्रूज पर सवार जिंदगियां मौत से जूझ रही थीं, तब जिले का बचाव दल संसाधनों और तकनीकी कौशल के अभाव, बल की कमी में बेबस खड़ा नजर आया। जबकि समय-समय पर आपदा प्रबंधन के नाम पर मॉक ड्रिल कर अपनी पीठ थपथपाता नजर आता रहा है।

मैं जिंदगी से तंग आकर थक गया हूं

सुसाइड नोट लिख बीएसएफ के पूर्व जवान ने की आत्महत्या

जबलपुर। कटंगी थाना अंतर्गत कूडन निवासी एक बीएसएफ के पूर्व जवान ने फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली । मृतक के पास से सुसाइड नोट बरामद हुआ है जिसमें उसने लिखा है कि मैं अपनी जिंदगी से तंग आ चुका और सफर तय करते-करते अब थक चुका हूं, परेशान हो गया हूं अपनी मर्जी से आत्महत्या कर रहा हूं, इसका जिम्मेदार मैं स्वयं हूं, मेरे परिजनों को परेशान न किया जाएं ।

पुलिस के मुताबिक शिवम श्रीवास्तव 28 वर्ष निवासी पंचवटी वार्ड न. 05 भेड़ाघाट कूडन मोहल्ला हाई स्कूल के पास कटंगी का नगर परिषद कटंगी में एलडीसी के पद पर कार्य करता है। उसके घर में वह एवं पत्नि पूनम, पिता शिवकुमार रहते है, मंगलवार रात करीब 11 बजे सभी लोग खाना खाकर, वह

अपने कमरे में और पिता बगल वाले कमरे में सो गये थे। बुधवार सुबह करीब 09 बजे वह सोकर उठा फिर एक-डेढ़ घण्टे तक पिता का कमरा नही खुला तो वह पिता के कमरे में जाकर देखा तो सामने तरफवाले दरवाजा में बाहर ताला लगा था और दूसरा वाला दरवाजा अंदर से लॉक लगा था तब खिडकी से देखा तो उसके पिता शिव कुमार श्रीवास्तव फांसी पर लटके हुये दिखे। अपने पडोसी इदुल खान और अन्य लोगों के साथ कमरा का दरवाजा तोडा और अंदर गया । कमरे की छत में लगे पंखे की हुक में रस्सी का फंदा लगाकर फांसी लगा लेने से पिता शिवकुमार श्रीवास्तव 58 वर्ष की मौत हो गई।

ऑडियो-सुसाइड नोट की होगी जांच

टीआई पूजा उपाध्याय ने बताया कि शिवकुमार श्रीवास्तव 69 वर्ष का बीएसएफ में पदस्थ था जिसने नौकरी छोड़ दी थी। उसकी पत्नी का पूर्व में निधन हो चुका है। मामले की सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंच गई और सुसाइड नोट, मोबाइल जब्त कर लिया है । मृतक के मोबाइल में एक ऑडियो भी मिला है जिसमें महिला से बातचीत और धमकी की बात सामने आ रही है पुलिस हर एंगल पर तफ्तीश कर रही है।

स्वत्वाधिकारी रामगोपाल इन्वेस्टमेंट प्राईवेट लिमिटेड हेतु लेसी एंगेज मीडिया प्रा.लि. के लिए आशीष श्रोती द्वारा नेपियर टाऊन बस स्टैण्ड जबलपुर से प्रकाशित एवं नेपियर टाऊन बस स्टैण्ड जबलपुर से मुद्रित. स्थानीय संपादक अविनाश दीक्षित*, *समाचार चयन के लिए पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत जिम्मेदार, फोन-0761-4109072, E mail-navbharatjabalpur@gmail.com पो.रजि.नं.201-04/2003 RNI Reg No.1537/57